Telangana Today 28-April-2021

TS home to 143 fish species

CITY BUREAU
Hyderabad

Telangana's waters appear to be much richer than one could have imagined all these years. A study recently conducted by zoologists from Osmania University on the fish diversity in the State has revealed the presence of 143 species of fishes in the waters here.

According to the study, of these, two species — Rita bakalu and Indoreonectes telanganaensis, are fishes restricted in their distribution to the State.

These are found in the Godavari River and its tributaries in northern Telangana. Another species, Pangasius silasi, is restricted to the Nagarjuna Sagar area of Krishna River, and has been recorded both in Telangana and Andhra Pradesh.

(SEE PAGE 2)

(Top to bottom) Salmostoma phulo, Lepidocephalichthys guntea and Sperata seenghala.

Deccan Chronicle 28-April-2021

COOL | WEATHER **IMD attributed the weather to an upper air cyclonic circulation over AP**

New thunderstorm warning issued for TS

DC CORRESPONDENT
HYDERABAD, APRIL 27

Indian Meteorological Department (IMD) has extended the thunderstorm warning for the state till May 1 saying thunderstorm accompanied by lightning and gusty winds of 30–40 kmph are likely to occur at isolated places in Telangana.

As of 8.20 pm on Tuesday, the highest rainfall of 18.5 mm was recorded in the city at Madhapur. Similarly, in the state, the highest rainfall was at Sathupalle in Khammam district, which received 44 mm of rainfall.

IMD attributed the weather to an upper air cyclonic circulation, which is currently over Andhra Pradesh.

According to IMD and Ministry of Earth Sciences, thunderstorms with lightning and gusty winds are very likely at isolated places over Assam and Meghalaya, Madhya Maharashtra, Marathwada, Telangana, Kerala and Mahe; and with lightning at isolated places over Vidarbha, Chhattisgarh, sub-Himalayan West Bengal and Sikkim, Odisha, Arunachal Pradesh, Nagaland, Manipur, Mizoram and Tripura, Gujarat, Konkan, and Goa, coastal Andhra Pradesh and Yanam, Karnataka and Tamil Nadu, Puducherry and Karaikal.

- **AS OF** 8.20 pm on Tuesday, the highest rainfall of 18.5 mm was recorded in the city at Madhapur. Similarly, in the state, the highest rainfall was at Sathupalle in Khammam district, which received 44 mm of rainfall.
- **IMD ATTRIBUTED** the weather to an upper air cyclonic circulation, which is currently over Andhra Pradesh.
- **THUNDERSTORMS** accompanied by lightning and gusty winds of 30–40 kmph are likely to occur at isolated places in Telangana.

Motorists take shelter under a bus stop as it drizzled at Greenlands in Hyderabad on Tuesday. — *R. PAVAN*

Rashtriya Sahara 28-April-2021

छोटी-बड़ी 31 नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने के निर्देश

एक मई से 15 जून तक गोमती नदी में जल की गुणवत्ता सुधारने को पानी छोड़ने के दिए गए आदेश

लखनऊ (एसएनबी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गंगा, यमुना, घाघरा और सरयू को मिलाकर छोटी, बड़ी सभी 31 नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने के निर्देश जारी किए हैं। इसी क्रम में लाखों लोगों की जीवन रेखा गोमती नदी के प्रदूषण को कम करने, उसे स्वच्छ और निर्मल बनाने के प्रयास किए जा रहे है। इस महत्वपूर्ण कार्य को अमलीजामा पहनाने के लिए एक मई से 15 जून तक गोमती नदी में जल की गुणवत्ता को सुधारने के लिए पानी छोड़ने के आदेश दिए गए हैं।

अधिकृत सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि लखनऊ स्थित गोमतीनगर में 1090 चौराहे के पास जल निगम की ओर से जीएच कैनाल बनाने का काम भी तेज गति से किया जा रहा है। सितम्बर 2022 तक इसे संचालित कर दिया जाएगा। इसके बाद गोमती नदी में बड़े नालों की गंदगी नहीं गिरेगी। इससे नदी में जलीय जंतुओं को सांस लेने में आसानी होगी। साथ में राजधानी के बीच नदी का प्रवाह भी स्वच्छ और निर्मल हो जाएगा। उन्होंने बताया कि 336 करोड़ की लागत से 120 एमएलडी के जीएच कैनाल एसटीपी के बनने से गोमती नदी स्वच्छ और निर्मल हो जाएगी। नाले से आने वाले सीवेज को शोधित करके गोमती में भेजा जाएगा। जीएच कैनाल जिसे लोग हैदर कैनाल नाले के रूप में जानते है, कानपुर के सीसामऊ नाले की तर्ज पर राजधानी के बीच से गुजर रहा है। प्रदूषण का बड़ा कारण बनने के चलते नाले पर एसटीपी बनाने का काम तेजी से चल रहा है। इसके पूरा होने पर नदी में प्रदूषण होने का खतरा एकदम नहीं रहेगा। जलीय जन्तुओं के जीवन के लिये भी यह काफी लाभकारी हो जाएगा। सूत्रों ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जून 2018 में खुद गोमती सफाई अभियान की नींव रखने के बाद नदी को स्वच्छ और निर्मल बनाने के निर्देश दिए थे। इसके बाद प्रदेश में विभिन्न स्थलों पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण हो चुका है। सरकार के निर्देश पर एसटीपी निर्माण कार्य के दौरान राजधानी के बीच छह एकड़ भूमि में बन रहे जीएच कैनाल पर 150 बड़े पेड़ों को बचा लिया गया है। इनको काटे बिना निर्माण कार्य किया जा रहा है।

Jansatta 28-April-2021

बचाना होगा पानी

प्रदीप श्रीवास्तव

पृथ्वी पर उपस्थित कुल जल का मात्र एक फीसद जल ही उपयोगी है। इस एक फीसद जल पर दुनिया की करीब आठ अरब आबादी सहित सारे जीव और वनस्पतियां निर्भर हैं। इस मीठे जल से सिंचाई, कृषि और तमाम उद्योग संचालित होते हैं। जाहिर है, आने वाले वक्त में जल संकट और गंभीर रूप लेता जाएगा।

हम आदि काल से जल संरक्षित करते आ रहे हैं। लेकिन आधुनिक जीवन शैली ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की सोच को मात्र कुछ गैर सरकारी संगठनों और सरकारों तक ही सीमित कर दिया है। लगता ही नहीं है कि जल, वायु, जमीन या अन्य प्राकृतिक संसाधनों की भी सीमा है और ये अनंत काल तक चलने वाले नहीं हैं। अगर हमें सीखना ही है तो हम अपने इतिहास से काफी कुछ सीख सकते हैं। हमारे यहां आदि काल में जब पर्याप्त पानी था, तब भी जल संरक्षण के पुख्ता इंतजाम किए जाते थे और उन्हीं तरीकों में थोड़ा-बहुत बदलाव करके आज हम पानी की समस्या से काफी हद तक मुक्ति पा सकते हैं। भारत में जल संरक्षण का एक बेहतरीन इतिहास रहा है। यहां जल संरक्षण की मूल्यवान पारंपरिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपरा है, जिसे न सिर्फ जानना है, बल्कि हमें उसे अपनाना भी होगा।

वैदिक काल में जल संचयन का काम प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों तरीके से होता था। अगर अभी के हालात देखे जाएं तो देश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था की धुरी जल प्रबंधन ही है। इस पर ही कृषि, औद्योगिक एवं तकनीकी प्रगति निर्भर करती है। भारत में भू-जल विज्ञान का विकास लगभग पांच हजार साल से भी अधिक पुराना है। वैदिक साहित्य में इसके प्रमाण मौजूद हैं। इसमें श्लोकों, सूत्रों और स्तुतियों के रूप में विभिन्न देवताओं- इंद्र, वायु, अग्नि आदि की उपासना की गई है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में 'जल ही जीवन है' का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया था। वैदिक साहित्य में जल स्रोतों, जल के महत्त्व, उसकी गुणवत्ता एवं संरक्षण की बात बारंबार की गई है। वैदिक काल में जल प्रबंधन का कार्य वृहत एवं अति उत्तम विधियों से किया जाता था। चरक संहिता में भी भू-जल की गुणवत्ता की चर्चा की गई है। वृहत्संहिता के चौवनवें अध्याय में जमीन के नीचे के पानी का पता बताने वाले वृक्षों, जीवों, भूमि और चट्टानों से जुड़े विशेष संकेतकों और कुआं खोदने की विधि का वर्णन मिलता है। प्रकृति में कुछ ऐसे वृक्ष मौजूद हैं जो अपने नीचे की जमीन में पानी की मौजूदगी की जानकारी देते हैं। आज के पारिस्थिकी विज्ञान और वराहमिहिर के परंपरागत विज्ञान के बीच भी संबंध मिलता है। प्रकृति ने पृथ्वी के इकहत्तर प्रतिशत भाग को जलमय बनाया है। इतना ही नहीं, स्वयं हमारे शरीर का सड़सठ प्रतिशत भाग जल ही है।

जल जीवन के लिए सर्वाधिक आवश्यक वस्तु है। लेकिन आज उसके स्रोत घटते जा रहे हैं। आज दुनियाभर को सुरक्षित और ताजा जल-स्रोतों की तात्कालिक जरूरत है। स्वास्थ्य की रक्षा और उसे बनाए रखने के लिए पेयजल और स्वच्छता-सुविधाएं मूल आवश्यकताओं में शुमार हो गई हैं। सभी लोगों के लिए जलापूर्ति और स्वच्छता उनके स्वास्थ्य और विकास-संबंधी मुद्दों की दृष्टि से एक राष्ट्रीय चुनौती बन गई है। भूजल की गुणवत्ता में निरंतर गिरावट आ रही है। एक अनुमान के अनुसार देश की चौदह लाख से ज्यादा बस्तियों में दूषित पानी पहुंचता है। सवाल है ऐसे में कैसे लोगों को साफ पानी मिले?

अन्य देशों की तरह भारत में भी जल संकट की समस्या गंभीर है। तेजी से होते शहरीकरण से तालाब और झीलों जैसे परंपरागत जल स्रोत खत्म हो गए हैं। केंद्रीय भूजल बोर्ड के विभिन्न राज्यों में कराए गए सर्वेक्षणों से भी यह बात स्पष्ट होती है कि इन राज्यों के भूजल स्तर में बीस सेंटीमीटर प्रतिवर्ष की दर से गिरावट आ रही है। भारत में वर्तमान में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता दो हजार घनमीटर है। लेकिन यदि हालात ऐसे ही बने रहे तो अगले दो दशकों में जल की उपलब्धता घट कर एक हजार पांच सौ घनमीटर प्रति व्यक्ति रह जाएगी। जल की उपलब्धता का एक हजार छह सौ अस्सी घनमीटर से कम रह जाने अर्थ है, पीने के पानी से लेकर अन्य दैनिक उपयोग तक के लिए जल की अत्यधिक कमी।

भारत में भूमिगत जल के अधिक प्रयोग के कारण परंपरागत जलस्रोत सूख रहे हैं। पृथ्वी पर कुल उपलब्ध जल का लगभग 97.5 प्रतिशत जल समुद्र-ी है। समुद्री जल खारा होने की वजह से हमारे लिए अनुपयोगी है। बाकी ढाई प्रतिशत जल मीठा है। किंतु इसका चौबीस लाख घन किलोमीटर हिस्सा छह सौ मीटर गहराई में भूमिगत जल के रूप में विद्यमान है और लगभग पांच लाख घन किलोमीटर जल गंदा व प्रदूषित हो चुका है। यानी पृथ्वी पर उपस्थित कुल जल का मात्र एक फीसद जल ही उपयोगी है। इस एक फीसद जल पर दुनिया की करीब आठ अरब आबादी सहित सारे जीव और वनस्पतियां निर्भर हैं। इस मीठे जल से सिंचाई, कृषि और तमाम उद्योग संचालित होते हैं। जाहिर है, आने वाले वक्त में जल संकट और गंभीर रूप लेता जाएगा। इससे देश में खाद्यान्न संकट पैदा होगा, उद्योग खत्म होने लगेंगे, पलायन, बेरोजगारी और आपसी संघर्ष को बढ़ावा मिलेगा और देश की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचेगा। भारत वर्ष में विश्व के कुल मीठे जल की मात्रा का 2.5 प्रतिशत जल मौजूद है, जिसका नवासी प्रतिशत हिस्सा कृषि क्षेत्र में उपयोग किया जाता है।

इस वक्त देश के सभी हिस्सों में जल प्रबंधन पर तत्काल काम शुरू किए जाने की जरूरत है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से शुरुआत करनी होगी, क्योंकि सर्वाधिक मात्रा में कृषि कार्यों में ही जल का उपयोग किया जाता है। सिंचाई में जल का दुरुपयोग एक गंभीर समस्या है। आम धारणा है कि अधिक पानी अधिक उपज, जो कि गलत है। फसलों के उत्पादन में सिंचाई का योगदान पंद्रह-सोलह प्रतिशत होता है। बूंद-बूंद सिंचाई, फव्वारा तकनीक और खेतों के समतलीकरण से सिंचाई में जल का दुरुपयोग रोका जा सकता है। फसलों को जीवन रक्षक या पूरक सिंचाई देकर उपज को दोगुना किया जा सकता है। ढाल के विपरीत जुताई और खेतों की मेड़बंदी से भी पानी रुकता है। छोटे-बड़े सभी कृषि क्षेत्रों पर क्षेत्रफल के हिसाब से तालाब बनाना जरूरी है। ग्राम स्तर पर बड़े तालाबों का निर्माण गांव के लिए उपयोगी है, साथ ही यह भू-गर्भ जलस्तर को बढ़ाता है। देश की मानसूनी वर्षा का लगभग पचहत्तर फीसद जल भूमि जल की कमी दूर करता है। देश के विभिन्न पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के अनुसार लगभग तीन करोड़ हेक्टेयर मीटर जल का संग्रहण किया जा सकता है। कृषि के बाद शेष ग्यारह प्रतिशत जल का उपयोग मानवीय उपभोग तथा उद्योगों में किया जाता है।

भारत जल के वैश्विक स्रोतों का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। पूरे विश्व में भारत में पानी का अत्यधिक प्रयोग तेरह प्रतिशत होता है। भारत के बाद चीन बारह प्रतिशत और अमेरिका नौ प्रतिशत जल उपयोग करता है। एक रिपोर्ट के अनुसार 2050 तक बहुत-सी भारतीय नदियों में पानी का संकट होगा। भारत को प्रतिवर्ष वर्षा और बर्फ से बह कर आने वाली नदियों से औसतन चार हजार अरब क्यूबिक मीटर जल प्राप्त होता है। भारत में साढ़े चार हजार से ज्यादा बांध हैं, जिनकी संग्रह क्षमता दो सौ बीस अरब क्यूबिक मीटर है। इसमें जल संग्रह के छोटे-छोटे स्रोत शामिल नहीं हैं, जिनकी क्षमता छह सौ दस अरब क्यूबिक मीटर है। फिर भी हमारी प्रति व्यक्ति संग्रहण की क्षमता आस्ट्रेलिया, चीन, मोरक्को, दक्षिण अफ्रीका, स्पेन और अमेरिका से बहुत कम है।

प्राणीजगत के लिए जल अत्यावश्यक है। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों का हनन नहीं होना चाहिए। पहाड़ों, जलस्रोतों व वनों को एक सूत्र में बांधा जाना बहुत जरूरी है। इसके माध्यम से ही जल संरक्षण संभव है। इसलिए जंगलों, नदियों को बचाना जरूरी है, क्योंकि इन दोनों से ही लोगों को पीने का पानी और पर्याप्त शुद्ध वातावरण मिलेगा।

Haribhoomi 28-April-2021

लाखों लोगों की जीवन रेखा गोमती को निर्मल बनाने जुटी

यूपी सरकार 336 करोड़ रुपए खर्च कर गोमती को बनाएगी स्वच्छ और निर्मल

राज्य सरकार के अनुसार 336 करोड़ की लागत से 120 एमएलडी के जीएच कैनाल एसटीपी के बनने से गोमती नदी स्वच्छ और निर्मल हो जाएगी। नाले से आने वाले सीवेज को शोधित करके गोमती में भेजा जाएगा।

एजेंसी ▶▶ लखनऊ

प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश से होकर बहने वाली गंगा, यमुना, घाघरा और सरयू को मिलाकर छोटी, बड़ी सभी 31 नदियों को प्रदूषण मुक्त बनाने का बेड़ा उठाया है। इसी क्रम में कोरोना काल में भी सरकार अपने अथक प्रयासों से लाखों लोगों की जीवन रेखा गोमती नदी के प्रदूषण को कम करने, उसे स्वच्छ और निर्मल बनाने में जुटी है।

इस महत्वपूर्ण कार्य को अमलीजामा पहनाने के लिए एक मई से 15 जून तक गोमती नदी में जल की गुणवत्ता को सुधारने के लिए पानी छोड़ने के आदेश दिए गए हैं। राज्य सरकार से मिली जानकारी के अनुसार लखनऊ स्थित गोमतीनगर में 1090 चौराहे के पास जल निगम की ओर से जीएच कैनाल बनाने का काम भी तेज गति से किया जा रहा है। सितंबर 2022 तक इसे संचालित कर दिया जाएगा। इसके बाद गोमती नदी में बड़े नालों की गंदगी नहीं गिरेगी। इससे नदी में जलीय जंतुओं को सांस लेने में आसानी होगी, साथ में राजधानी के बीच नदी का प्रवाह भी स्वच्छ और निर्मल हो जाएगा।

- योगी सरकार के चार वर्ष पूरे होने पर पीलीभीत को बड़ी सौगात दी

सीवेज को शोधित करके गोमती में भेजा जाएगा

राज्य सरकार के अनुसार 336 करोड़ की लागत से 120 एमएलडी के जीएच कैनाल एसटीपी के बनने से गोमती नदी स्वच्छ और निर्मल हो जाएगी। नाले से आने वाले सीवेज को शोधित करके गोमती में भेजा जाएगा। जीएच कैनाल जिसे लोग हैदर कैनाल नाले के रूप में जानते हैं कानपुर के सीसामऊ नाले की तर्ज पर राजधानी के बीच से गुजर रहा है। प्रदूषण का बड़ा कारण बनने के चलते नाले पर एसटीपी बनाने का काम तेजी से चल रहा है। इसके पूरा होने पर नदी में प्रदूषण होने का खतरा एकदम नहीं रहेगा। जलीय जन्तुओं के जीवन के लिए भी यह काफी लाभकारी हो जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जून 2018 में खुद गोमती सफाई अभियान की नींव रखने के बाद नदी को स्वच्छ और निर्मल बनाने के निर्देश दिए थे। इसके बाद प्रदेश में विभिन्न स्थलों पर सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण हो चुका है। यूपी सरकार के निर्देश पर एसटीपी निर्माण कार्य के दौरान राजधानी के बीच छह एकड़ भूमि में बन रहे जीएच कैनाल पर 150 बड़े पेड़ों को बचा लिया गया है। इनको काटे बिना निर्माण कार्य किया जा रहा है। यह अनोखा प्रयास जल निगम ने सरकार के निर्देश पर किया है।

File No.T-74074/10/2019-WSE DTE

Dainik Jagran 28-April-2021

जागरण विशेष

जल संरक्षण

जल सहेजने वाला शांतिकुंज का यह प्रयास दिला रहा सुकून

रोजाना इस्तेमाल किए हुए 50 हजार लीटर पानी को रिसाइकिल कर रही है यह संस्था, वर्षाजल की भी एक भी बूंद नहीं जाने देती व्यर्थ

अनूप कुमार • हरिद्वार

इस्तेमाल किए गए पानी को शोधित करने के बाद फुलवारी की सिंचाई करता शांतिकुंज का साधक • साभार : शांतिकुंज

ऐसे छोटे-छोटे प्रोजेक्ट बड़ी सफलता का आधार हो सकते हैं। केवल हरिद्वार शहर में ही सैकड़ों ऐसे आश्रम हैं, जहां हर दिन हजारों श्रद्धालु सामूहिक भोजन करते हैं और हजारों लीटर पानी नालियों में बहा देते हैं। यदि इन आश्रमों में भी इस मॉडल को अपनाया जाए तो हर दिन लाखों लीटर पानी को बर्बाद होने से बचाया जा सकेगा। इसके अलावा एक फायदा यह भी है कि इसके बाद सिंचाई के लिए अंडरग्राउंड पानी का इस्तेमाल नहीं करना पड़ता। इससे अंडर वाटर लेवल को स्थिर बनाए रखने और उसे बढ़ाने में मदद मिली है।

डॉ प्रणव पंड्या, प्रमुख, गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज, हरिद्वार

ताकि मिलती रहे अमृत बूंदें

दैनिक जागरण अपने सातों सरोकार के तहत जल संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए लगातार मुहिम छेड़े हुए है। प्रयास रंग ला रहा है। पानी को सहेजने का काम लोग व्यक्तिगत, संस्थागत और समाज स्तर पर करने लगे हैं। इसी अभियान के क्रम में पेश है आज की प्रेरक स्टोरी।

आध्यात्मिक संस्था गायत्री तीर्थ शांतिकुंज सामाजिक सरोकारों का भी बखूबी निर्वहन कर रही है। यह रोजाना 50 हजार लीटर इस्तेमाल किए हुए पानी को रिसाइकिल कर दोबारा उपयोग में ला रही है। यहां हरियाली और बागवानी ही नहीं, रिहायशी इलाके की साफ-सफाई, धुलाई आदि भी इसी पानी से होती है। खास बात यह कि हरिद्वार में शांतिकुंज ने ही सबसे पहले वर्षाजल के संरक्षण की पहल की और इसके लिए पुख्ता इंतजाम भी किए। इसी का नतीजा है कि आज शांतिकुंज में वर्षाजल की एक बूंद भी व्यर्थ नहीं जाती।

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में इंजीनियर, कारीगर व कलाकारों के साथ ही साधना व कला कौशल प्रशिक्षण शिविरों के हजारों प्रशिक्षु, साधक और कर्मयोगी निवास करते हैं। इन सभी के लिए अन्य व्यवस्थाओं के साथ-साथ विशाल भोजनालय भी चलता है। यहां पांच से आठ हजार श्रद्धालु भी रोजाना भोजन करते हैं। पर्व व विशेष आयोजनों पर तो यह संख्या 20 हजार से अधिक पहुंच जाती है। ऐसे में भोजन बनाने, सब्जी, बर्तन व हाथ धोने आदि कार्यों में हजारों लीटर पानी इस्तेमाल होता है। पूर्व में यह इस्तेमाल किया हुआ पानी नालियों में बह जाता था, जिसे संरक्षित और दोबारा उपयोग में लाने का अनूठा प्रयोग शांतिकुंज ने किया है।

प्राचीन तरीके से साफ होता है पानी: प्रोजेक्ट इंजीनियर जय सिंह बताते हैं कि इस्तेमाल किए जा चुके पानी को एक महीन जाली से छानकर चरणवार अलग-अलग टैंक से गुजारा जाता है। पहले चरण में पानी को रेत, दूसरे में कोयला, तीसरे में बजरी, चौथे में ग्रेवल, पांचवें में पेबल, छठे में बोल्डर और अंत में ईंट से गुजारा जाता है। यह पानी बहुत हद पेयजल जितना शुद्ध होता है। यह एक प्राचीन पद्धति है, जिसे सदियों पूर्व ऋषि-मुनि प्रयोग में लाया करते थे।

बाहरी जल का भी संरक्षण: शांतिकुंज में एक दूसरा प्लांट भी है, जिसमें ऊपरी क्षेत्र (आसपास के आश्रम और खेत खलिहान) से आने वाले जल को संग्रहीत किया जाता है। इस पानी को भी पहले फिल्टर किया जाता फिर अन्य कार्यों में प्रयोग किया जाता है।

स्कैन करें और पढ़ें 'सहेज लो, हर बूंद' अभियान की अन्य सामग्री।